IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और गाँधी जी के विचार

[1]शकुन्तला जाँगिड, [2]डॉ. पूनम मिश्रा

[1]पीएच.डी. शोधार्थी, [2]एसोसिएट प्रोफेसर

शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश / आलेखः–

महात्मा गाँधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को बुनियादी शिक्षा कहा जाता है, जिसका मुख्य लक्ष्य मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना तथा साथ ही बच्चों को कुशल और स्वतन्त्र बनाने के लिए गतिविधि केन्द्रित शिक्षा प्रदान करना है। गाँधी जी की इच्छा थी, कि बच्चों के लिए स्थानीय शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाया जावे, ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा का सामन्जस्यपूर्ण विकास कर सकें। गाँधी जी ने आत्मबोध के अंतिम सत्य को प्राप्त करने के लिए सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों पर जोर दिया है, उन्होने हमेशा काम करके सीखने और अनुभव से सीखने की बात पर बल दिया है। गाँधी जी की शिक्षा नीति में सैद्धान्तिक शिक्षा के साथ–साथ छात्रों के लिए व्यावसायिक शिक्षा कौशल के विकास आदि पाठ्यक्रमों का समावेश किया गया है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं शताब्दी की आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए अपनी रणनीतियाँ बताते हुए गाँधी जी के दृष्टिकोण को भी रेखाकिंत करती है। गाँधी जी की शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दोनों में बालकों के संवैधानिक अधिकारों के साथ–साथ संवैधानिक मूल्यों को पढ़ाने पर जोर दिया गया है, इस प्रकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे ं महात्मा गाँधी के विचारां का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। यह शोध पत्र के माध्यम से शोधकर्ता ने इस बात को प्रमुख रूप से दर्शाने की कोशिश की है, कि गाँधी जी के जीवन मूल्य की महत्तता क्या है, और किस प्रकार गाँधी जी की शिक्षा आज के युग में प्रासंगिक है। मूख्य शब्दः

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बेसिक शिक्षा योजना, व्यावसायिक शिक्षा, संवैधानिक अधिकार, संवैधानिक मूल्य,

गाँधी जी का जीवन दर्शन, शैक्षिक विचार एवं उद्देश्यः–

गाँधी जी सादा जीवन एवं उच्च विचार रखने वाले एक सरल व्यक्तित्व के स्वामी थे, उन्होने लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा को आवश्यक माना तथा उन्होने शिक्षा के लिए मातृभाषा को चुना वे शिक्षा के माध्यम से समाज में समता लाना चाहते थे। महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन मं वे सारी बुनियादी और व्यावहारिक बातें शामिल हैं, जो मानव जीवन को श्रेष्ठतर बनाती हैं, गाँधी जी के जीवन दर्शन के व्यावहारिक पहलुओं के प्रति अपनी वैज्ञानिक दृष्टि प्रस्तुत करते हुए सीतारमैया ने स्पष्ट किया था, कि 'गाँधी वादी नीतियों, सिद्धान्तों, नियमों, आदर्शों आदि का केवल सिद्धान्त अथवा कोरा विचार ही नहीं, बल्कि एक सुघढ़ मार्ग है।' गाँधी जी के जीवन दर्शन में मानवीय मूल्यों की स्थापना की गई है, जो कि आदर्शवाद, प्रकृतिवाद व प्रयोजनवाद का समन्वयवादी प्रारूप प्रस्तुत करता है। डॉ. राधाकृष्णन ने गाँधी जी के जीवन दर्शन के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, 'अपने जीवन एवं उपदेश द्वारा उन्होने मूल्यों का यह प्रभाव रखा जिसको यह देश युगों से मानता रहा – ऐसे मूल्य जो केवल राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय नहीं है, वरन् सार्वभौमिक एवं शाश्वत है।' गाँधी जी की शिक्षा सम्बन्धित विचारधारा उनके नैतिकता तथा स्वावलम्बन सम्बन्धि सिद्धान्तों पर आधारित थी, गाँधी जी ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे, उनके अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो व्यक्ति को अच्छे बुरे का ज्ञान प्रदान कर, उसे नैतिकतावादी बनने के लिए प्रेरित करे। गाँधी जी का मानना था, कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा को अधिक रूचि तथा सहजता के साथ ग्रहण कर सकता है, कई मनोवैज्ञानिकों, दार्शनिकों तथा शिक्षाशास्त्रीयों ने भी शिक्षा के स्वरूप का मातृभाषा आधारित होने पर जोर दिया है। स्वाधीन भारत के शैक्षिक उद्देश्य के सम्बन्ध में गाँधी जी ने कहा – मैं चरित्र निर्माण में साहस, शक्ति, सद्गुणों और बड़े लक्ष्यों की पूर्ति मं अपन को भूल जाने की याग्यता का विकास करने का प्रयत्न करूंगा। गाँधी जी ने शिक्षा के उदद् श्े यो ंपर गहनता से चिन्तन और मनन किया तथा भारतीय पृष्ठ भूमि को ध्यान में

रखकर इसके स्वरूप का निर्धारण किया है, उन्होने शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण मं` अतिव्यापक और व्यावहारिक दृष्टिकोण का`अपनाया है, गाँधी जी शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का उच्चतम विकास करना चाहते थे, शिक्षा और उसके उद्देश्यों के सम्बन्ध में गाँधी जी न` जो विचार व्यक्त किये हैं, उनको हम निम्नलिखित क्रम में अभिव्यक्त कर सकते हैं:–

- गाँधी जी शिक्षा के माध्यम से बालक में चारित्रिक पवित्रता प्रदान करके सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह और निर्भरता आदि गुणों का विकास चाहते थे,
- बालक को अपने व्यवहार में अपनी संस्कृति को व्यक्त करने का प्रशिक्षण देना।
- गाँधी जी आर्थिक विकास अभाव की मुक्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते थे, और मनुष्य को आत्म निर्भर बनाना चाहते थे, इसलिए वह हस्तकला और उद्योग पर बल देते थे।
- गाँधी जी ने शिक्षा के अंतिम उद्देश्य को इन शब्दों में व्यक्त किया है, 'अंतिम वास्तविकता का अनुभव, ईश्वर और आत्मानुभूति का ज्ञान है।'

गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा एवं नई शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी शिक्षा का स्वरूप :–

युग पुरूष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत को आजाद कराने में ही अपना योगदान नहीं दिया बल्कि उन्होने एक दूरदर्शी शिक्षावृत के रूप मं` कर्त्तव्य एवं कर्म आधारित मूल्यवादी दृष्टिकोण से एक नई शिक्षा योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की। गाँधी जी ने आज से सौ साल पहले ही नई शिक्षा नीति के सिद्धान्तों और प्रणाली का सपना देखा था, जिसे आज के समय में पूरा किया जा रहा है, गाँधी जी ने अक्टूबर 1937 में वर्धा सम्मेलन में शिक्षाविदों के समक्ष बुनियादी शिक्षा योजना को प्रस्तुत किया, जिसे वर्धा योजना के नाम से भी जाना जाता है, कुछ शिक्षाविद् इसे बेसिक शिक्षा या बुनियादी शिक्षा के नाम से भी जानते हैं। गाँधी जी का उद्देश्य था, कि शिक्षा का कार्य सिर्फ मानसिक प्रशिक्षण देना ही नहीं है, वरन उसका आधार हाथ व ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से शिक्षा का प्रारम्भ करके उसे मानसिक स्तर तक पहुँचाना है। वर्तमान में हम देखें कि जो शैक्षिक विचारधाराएँ गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा मं` मिलती है, वही विचारधाराएँ हमें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी दृष्टिगत होती हैं, जिसमं` बालक की प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की नीतियों में काफी समानता दर्शित होती हैं, जो बालक के मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक व आध्यात्मिक विकास पर भी बल देती हैं। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा एवं नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निम्नलिखित समानताएँ दृष्टिगत होती है:–

- शिक्षा की अवस्थाएँ – गाँधी जी के अनुसार बुनियादी शिक्षा में, शिक्षा की चार अवस्थाएँ बतायी गई है:–
  - प्रथम अवस्था – सम्पूर्ण समुदाय की शिक्षा, परिवार के सदस्यों द्वारा शिक्षा
  - द्वितीय अवस्था – प्री–बेसिक शिक्षा(इसमें सात से कम वर्ष आयु के बच्चों की शिक्षा सम्मिलित है)
  - तृतीय अवस्था – बेसिक शिक्षा(इसमें सात से पंद्रह वर्ष तक की आयु के बच्चों की शिक्षा सम्मिलित है)
  - चतुर्थ अवस्था – पोस्ट बेसिक शिक्षा(यह शिक्षा, बेसिक शिक्षा पूर्ण होने पर आरम्भ होगी, जिसमें पंद्रह से अठारह वर्ष तक के किशारों की शिक्षा की व्यवस्था की गई है)

  नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी 5+3+3+4 के फॉर्मेट को अपनाया गया है, जिसके तहत क्रमशः–
  - फाउण्डेशनल स्टेज – आंगनबाड़ी/स्कूल के तीन वर्ष + प्राथमिक स्तर के दो वर्ष
  - प्रीप्राईमरी स्टेज – आठ से ग्यारह वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को शिक्षा
  - मिडिल स्कूल स्टेज – ग्यारह से चौदह वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों की शिक्षा
  - सैकेण्डरी स्टेज – चौदह से अठारह वर्ष तक के किशारों की शिक्षा

  इस प्रकार संरचनात्मक रूप से दोनों ही शिक्षा नीतियाँ, शिक्षा मं` समानता को दर्शाती है, उक्त शिक्षा नीतियों का मुख्य उद्देश्य 'छः से चौदह वर्ष तक के सभी बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना है।'

- शिक्षा का माध्यम – गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को माना है, यही बात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी निहित है।

- पाठ्यक्रम – गाँधी जी का ऐसे पाठ्यक्रम में विश्वास था जो भौतिक तथा सामाजिक विकास का सृजन कर बालकों को समुचित ज्ञान दे, तथा बालकों को क्रियाशीलता से जोड़ने के लिए उन्होने अपने पाठ्यक्रम में 'हस्तकला' के विषय जोड़े जैसे कताई, बुनाई, धातु का काम, लकड़ी का काम, गत्ते का काम, मिट्टी का काम आदि सम्मिलित है, तथा सामाजिक अध्ययन इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, सामान्य विज्ञान आदि विषयों को अपने पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी हस्तकौशल के प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया है, तथा पाठ्यक्रम में पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित को शामिल किया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा में छात्रों की मदद करने के लिए आवश्यक सुधार प्रदान करती है, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य प्रारम्भिक बचपन की देखभाल, शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करना, मौजूदा परीक्षा प्रणाली में सुधार और शिक्षा ढ़ांचे में सुधार जैसे आवश्यक क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है। इस प्रकार गाँधी जी के शिक्षा पाठ्यक्रम सम्बन्धि विचारों व नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पाठ्यक्रम को लेकर समानता परिलक्षित होती है।

- शिक्षण पद्धति – गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा में बालकों के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षण विधियाँ बतायी हैं, जो निम्नलिखित हैंः–

  - अनुभव द्वारा सीखना
  - क्रिया द्वारा सीखना
  - सीखने की प्रक्रियाओं में समन्वय
  - शारीरिक अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग
  - मनसा, वाचा, कर्मणा में सम्बन्ध स्थापित कर सीखना नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी 'शिक्षण प्रक्रिया' को, शिक्षार्थी केन्द्रित होने तथा उसे अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित किये जाने पर तथा शिक्षा में विषयवस्तु को बढ़ाने की जगह, इस बात पर अधिक जोर दिया गया है, कि बच्चे समस्या समाधान को लेकर तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, जिससे कि बच्चों/शिक्षार्थीयों में नैतिकता, तार्किकता, करूणा और संवेदनशीलता विकसित हो सके। इस प्रकार दोनों ही शिक्षा नीतियों में शिक्षण पद्धति को लेकर समानताएँ दिखायी देती हैं।

- उद्देश्य – गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैंः–

  - बालकों का सभ्य नागरिकों के रूप में विकास करना।
  - बालकों में देश की संस्कृति के प्रति सही दृष्टि हो।
  - प्रत्येक के लिए शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।
  - विद्यार्थीयों मं` श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण करना।
  - ऐसी शिक्षा प्रदान करना जिससे बालकों में आत्म निर्भरता की प्रवृत्ति आ सके।

  इधर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है, जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराके भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवन्त और न्याय संगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करेगी। इस नीति का विजन छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए।

आत्मनिर्भरता की संकल्पना हमारे देश में कोई नई बात नहीं है, महात्मा गाँधी जी न` भी इसे अपने चिन्तन और व्यवहार में समावेशित किया था, आत्मनिर्भरता या स्वावलम्बन की संकल्पना गाँधी जी के जीवन दृष्टि का सार तत्व है, कोरोना संकट मं` वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भरता की संकल्पना को पुनः विमर्श के केन्द्र में ला दिया है, ऐसे में भारत केन्द्रित नई राष्ट्रीय शिक्षा

नीति का आना आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक सार्थक पहल है, इस शिक्षा नीति के सही क्रियान्वयन के द्वारा छात्र केवल नौकरी के लिए कतार में नहीं खड़े होंगे बल्कि अपने पैरों पर खड़े होने में सक्षम होंगे। महात्मा गाँधी ने 'हरिजन सेवक' के अंत में ग्राम स्वराज्य के संदर्भ में लिखा था गाँवों की पुनर्स्थापना का कार्य काम चलाउ नहीं बल्कि स्थायी होना चाहिए, गाँधी जी की नई तालीम का स्वरूप नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति है, इस नीति मं` सद्धैान्तिक शिक्षा के साथ–साथ छात्रों के लिए व्यावसायिक शिक्षा को कौशल विकास आदि का समावेश किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में राष्ट्रीय कौशल योग्यता, फ्रेम वर्क तथा उच्च शिक्षा मं` भी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को शामिल करने की चर्चा की गई है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इक्कीस वीं शताब्दी की आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए अपनी रणनीतियाँ बताते हुए, गाँधी जी के दृष्टिकोण को भी रेखांकित करती है। गाँधी जी ने अधिकार एवं कर्त्तव्य के सम्बन्ध में 'हरिजन सेवक' के 06.07.1947 के अंक में लिखा था, कि हर व्यक्ति अधिकारों पर जोर देने के बदले कर्त्तव्य अदा करे तो मनुष्य जाति में जल्दी ही व्यवस्था और अमन का राज्य कायम हो जायेगा। इस शिक्षा नीति में भी मौलिक अधिकारों के साथ–साथ बालकों को मौलिक कर्त्तव्य सीखाने पर बल दिया गया है, इस प्रकार से संवैधानिक अधिकारों के साथ–साथ संवैधानिक मूल्यों को पढ़ाने पर जोर दिया गया है, इस प्रकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में महात्मा गाँधी के विचारों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। हमारी नई शिक्षा नीति का मूल सिद्धान्त भी अच्छे मनुष्य विकसित करना है, जो समतापूर्ण और समावेशी समाज के विकास में योगदान दे सकें। गाँधी जी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकताः–वर्तमान समय में भारतीय समाज की समास्याओं का एक बड़ा कारण व्यक्ति की
भ्रष्टाचार बढत ी हुई स्वार्थवादी प्रवृत्ति आरै नैतिकता का पतन है, एसे`में शिक्षा द्वारा नैतिकता को बढ़ावा दिये जाने से इन समस्याओं का समाधान हो पायेगा, गाँधी जी का आरम्भिक शिक्षा में मातृभाषा को महत्व देने का विचार भी प्रासंगिक है, इससे बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि बनी रहेगी और नामाकंन दर में भी वृद्धि होगी साथ ही शिक्षा का हस्तशिल्प तथा कौशल से जोड़े जाने से बेरोजगारी तथा गरीबी की समस्या का समाधान होगा। गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों की उपयोगिता, वर्तमान भारत की समस्याओं के निराकरण करने में, उनकी बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों के माध्यम से स्पष्ट की जा सकती है, जो निम्न हैः–

- भारतीय परिस्थितियां के लिए उपयोगी – गाँधी जी ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे, जो भारतीय परिस्थितियों में उपयोगी हो।
- बालकों का सर्वांगीण विकास – गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों पर आधारित बुनियादी शिक्षा का उद्दश्े य बालकों का सर्वांगीण विकास करना था।
- अच्छी नागरिकता का विकास – आज के बालक कल के श्रेष्ठ नागरिक तभी बन सकते हैं, जब उनमें प्रेम, धैर्य, सद्भाव, सहनशीलता, परोपकार, सत्यनिष्ठा तथा सदाचार इत्यादि लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा हो।
- आर्थिक निर्भरता – आर्थिक निर्भरता वर्तमान भारत की सबसे अहम् आवश्यकता है, आज बेरोजगारी का प्रकोप विकराल व गंभीर रूप ले चुका है, ऐसे में गाँधी जी की शिक्षा छात्रों में स्वावलम्बी, आत्मविश्वासी एवं आत्मनिर्भर बनाकर बेरोजगारी की गभीर समस्या का समाधान कर सकती

  है। जैसे हस्तकौशल, कुटिर उद्योगों आदि की शिक्षा से छात्र स्वावलम्बी बन सकते हैं।

निष्कर्षः–

उक्त विवेचना से निष्कर्ष निकलता है, कि महात्मा गाँधी ने नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों व पहलुओं को पहले से ही अवधारित कर दिया था, लेकिन महात्मा गाँधी के विचारों को समग्र रूप से नई शिक्षा नीति 2020 में स्थान नहीं दिया गया है, जबकि महात्मा गाँधी के विचारों व नई शिक्षा नीति 2020 का तुलनात्मक रूप से देखा जाय` तो उसमें महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धित विचारों का समावेश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा एवं विद्या के क्षेत्र मं` गाँधीवादी सोच का समावेश दिखाई देता है, जिससे अवश्य ही शैक्षिक परिदृष्य में सकारात्मक बदलाव आयेगा, जो बालकों के समग्र विकास के लिए अनुकूल माहौल तैयार करेगा। इस प्रकार नई शिक्षा नीति के बाद शिक्षित छात्र बेहतर इंसान और कुशल नागरिक बनकर गाँधी जी उम्मीदों पर खरे उतरेंगे। संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1- महात्मा गाँधी के विचार, सं.–आर.के.प्रभु एवं यू.आर.राव., नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2005
2- गाँधी एम.के., 1963: 'नई शिक्षा की ओर', अहमदाबाद, नवजीवन पब्लिसिग हाउस।
3- मिश्रा अनिल दत्ता, 2015: 'महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार', नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाउस।
4- सक्सेना पराग, 2017: 'नई शिक्षा पद्धति', नई दिल्ली, अग्रवाल पब्लिकेशन।
5- शर्मा संदीप, 1998: 'शिक्षा के दार्शनिक आधार', आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
6- त्यागी औंकार सिंह, 2005: 'उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा', आगरा, राधा प्रकाशन।
7- मानव संशाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'
8- डॉ. प्रतीभा यादव, 2005, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगरा साहित्य प्रकाशन
9- https://www.education.qov.in
10- https://www.drishtiias.com 11- https://www.hindikeguru.com
12- https://www.mkgandhi.org
13- https://www.nayichetana.com
14- https://hi.m.wikipedia.org
15- https://aurjaniy.com